SHODH SAMAGAM

Online ISSN : 2581-6918

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग का भारत की बेरोजगारी तथा गरीबी उन्मूलन में भूमिका

डॉ. तूलिका शमा, अतिथि व्याख्याता,
बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author :
डॉ. तूलिका शमा, अतिथि व्याख्याता,
बस्तर विश्वविद्यालय,
जगदलपुर, छत्तीसगढ़, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 17/07/2019
Revised on : -----
Accepted on : 20/07/2019
Plagiarism : 05% on 18/07/2019

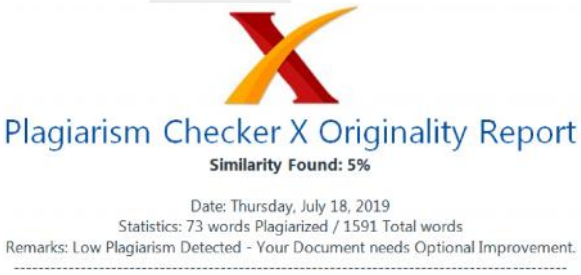

शोध सारांश :–

यह शोध पत्र सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग का भारत की बेरोजगारी तथा गरीबी उन्मूलन में भूमिका को बताता है। शोध का उद्देश्य भारत में गरीबी और बेरोजगारी के परिप्रेक्ष्य में सूक्ष्म लघु एवं मध्यम उद्योगो के महत्व को बता कर भारत के सामाजिक आर्थिक विकास में योगदान को बताना है। इसके साथ ही यह शोध पत्र भारत में विभिन्न शासकीय योजनाओं तथा श्रेणीवार उद्यगों का विवरण ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र के माध्यम से विभिन्न राज्यों में उद्यमिता को प्रोत्साहित कर भारत में लघु उद्योग की संभावनाओं को बताने पर विशेष ध्यान दिया है। अंततः लघु, उद्योग को बढ़ावा देने हेतु सुझाव पर भी केन्द्रित है।

मुख्य शब्द :–

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग, गरीबी उन्मूलन, बेरोजगारी, आर्थिक विकास ।

प्रस्तावना :–

कम निवेश वाले उद्योगों की श्रेणी में तीन प्रकार के उद्योगों को शामिल किया गया है – सूक्ष्म उद्योग, लघु उद्योग एवं मध्यम उद्योग। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग कम पूंजी निवेश में अधिक रोजगार के अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग विकास अधिनियम 2006 के अनुसार – सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्योग की परिवर्तन के बाद ''प्लांट और मशीनरी'' में निवेश की जगह ''टर्नओवर'' के आधार पर एमएमएमई का वर्गीकरण किया जायेगा। सूक्ष्म उद्योग सालाना टर्न ओवर रू. 5 करोड़ से कम, लघु उद्योग सालाना टर्न

ओवर रू. 5 करोड़ से 75 करोड़ के बीच एवं मध्यम उद्योग सालाना टर्न ओवर रू. 75 करोड़ से 250 करोड़ के बीच को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग की श्रेणी में रखा गया है।

भारत की अधिकांष जनसंख्या गरीबी और बेराजगारी की समस्या से जूझ रही है। इस समस्या को दूर करने का एक उचित साधन लघु उद्योग सिद्ध हो रहा है। लघु उद्योग छोटे पैमाने से कम विनियोग के द्वारा उत्पादन प्रारंभ किया जा सकता है। लघु उद्योग में श्रमिको की प्रधानता एवं कम पूंजी निवेश में आधुनिक रूप से उत्पादन कार्य किया जाता है। लघु उद्योग भारत के औद्योगिक अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे है। भारत देश में आर्थिक समानता लाने के लिये एवं बेरोजगारी तथा गरीबी उन्मूलन में लघु उद्योग सहायक सिद्ध हुए है।

वहीं दूसरी ओर आजादी के बाद से ही भारत में गरीबी उन्मूलन के लिये अनेक प्रयास किये जा रहे है। इसके साथ ही देश को आर्थिक रूप से सुदष्ढ़ करने के लिये इस समस्या को जड़ से मिटाने की आवश्यकता है। इसके लिये जरूरत है लघु उद्योगों को संगठित करने की। जिससे ग्रामीण क्षेत्र एवं निम्न आर्थिक स्तर के लोग लघु उद्योगों को स्थापित किया जा सके एवं बेरोजगारों को रोजगार मिल सके। इस प्रकार लघु उद्योग भारत की बेरोजगारी तथा गरीबी उन्मूलन में अहम भूमिका का निर्वाह कर सकते हैं।

देश की आर्थिक उन्नति का मतलब है राष्ट्रीय आय एवं प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि। ऐसे देश में वातावरण का निर्माण किया जाये जिससे छोटे उद्योागो की उन्नति हो सके। देश की अधिकांश जनसंख्या गॉव में निवास करती है। नगरों का विकास गॉव एंव ग्रामीण श्रमिको के परिश्रम पर निर्भर करता है। लघु उद्योग के महत्व को स्पष्ट करते हुए राष्ट्रपिता महात्मा गॉधी ने कहा था कि गॉवों की जनता शहरों में श्रमिक कार्य एवं कृषि पर ही निर्भर रहते है। उन्होने हस्तशिल्प और लघु एवं कुटीर उद्योग के महत्व को बताते हुए कहा कि गॉवों के विकास के लिए लघु उद्योगों एवं स्थानीय कलाओं के प्रति नागरिकों को जागृत करने की आवश्यकता है। वे केवल कृषि कार्य से स्वयं की आवश्यक जरूरतों को पूरा नहीं कर सकतें। उन्होने खादी एवं ग्रामोद्योग को ग्रामीण विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण बताया।

लघु उद्योग के लाभ :–

1. **बेरोजगारी में कमी** – लघु उद्योग में श्रम को अधिक महत्व दिया जाता है। ये उद्योग श्रम प्रधान होते है। इससे अधिक से अधिक लोगो को रोजगार मिलता है। अतः लधु उधोग के माध्यम से बेरोजगारी कम कर स्वरोजगार को बढाया जा सकता है।
2. **महिला सशक्तिकरण** – लघु उद्योग कम पूंजी में एवं सरलता से स्थापित किए जा सकते है। लद्यु उद्योगों को महिलायें आसानी से स्थापित कर सकती है। जिससे महिलायें आर्थिक एवं सामाजिक रूप से सुदृढ़ होगी।
3. **गरीबी उन्मूलन** – लघु उद्योग कम आर्थिक स्तर वाले व्यक्ति भी स्थापित कर सकते है। जिससे वे अपनी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ कर सकते है एंव अन्य व्यक्तियों को रोजगार भी दे सकते है जो गरीबी उन्मूलन के लिये बहुत महत्वपूर्ण है।
4. **कम पूंजी में उत्पादन** – लघु उद्योग कम लागत वाले उद्योग होते है। जिससे इनकी स्थापना में कम पूंजी का व्यय होता है। इसके द्वारा कम पूंजी में अधिक उत्पादन किया जा सकता है।
5. **विकेन्द्रीकरण** – लघु उद्योगों की स्थापना से केन्द्रीकरण की समस्या भी दूर होती है। बड़े उद्योग बड़े शहरों में ही केन्द्रित होते थे जिससे सामाजिक एवं आर्थिक समस्यायें उत्पन्न होती थी। परंतु लघु उद्योगों की स्थापना से केन्द्रीकरण की समस्या दूर होगी, जिससे बढ़ती सामाजिक आर्थिक समसयाओं में भी कमी आयेगी।

आरेख – 1 : लघु उद्योग के लाभ

भारत में लघु उद्योग हेतु सरकारी योजनाएं :–

भारत सरकार द्वारा लघु उद्योगों को बढ़ावा देने एवं उनके विकास हेतु विभिन्न योजनाओं का संचालन कर सब्सिडी प्रदान कर रही है। ये योजनाऐं एवं सब्सिडी नये उद्योगों को प्रारंभ करने एवं पुराने उद्योगों को जरूरत के अनुसार सहायता देने हेतु प्रारंभ की गई है। साथ ही साथ उद्योगों से उत्पन्न सामग्री को बाजार भी उपलब्ध कराने के प्रयास सरकार कर रही है। निश्चित रूप से इन योजनाओं के द्वारा लघु उद्योगों का विकास होगा जिससे गरीबी और बेरोजगारी में कमी आयेगी। सरकार विभिन्न योजनाओं के माध्यम से लघु उद्योगों द्वारा गरीबी एंव बेरोजगारी को दूर करने एवं भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ करने का निरंतर सफल प्रयास कर रही है।

तलिका – 1 : लघु उद्योग योजनाऍं एंव उद्देश्य

क्र.	योजनाऍं	उद्देश्य
1	प्रधानमंत्री रोजगार सृजन कार्यक्रम योजना	बेरोजगारों को आर्थिक सहायता प्रदान कर व्यापार के लिये प्रोत्साहित करना विशेषतः युवाओं को लाभान्वित करना।
2	मुद्रा योजना	लघु उद्योगो को साहूकारों से मुक्ति दिलाकर बैकों और अन्य संस्थाओं से ऋण उपलब्ध कराना।
3	परंपरिक उद्योग के उत्थान के लिए फण्ड का पुर्नोत्थान योजना (स्फूर्ति)	परंपरिक उद्योगो का उत्थान एवं विकास करना ।
4	प्रौद्योगिकी उन्नयन के लिए क्रेडिट लिंक कैपिटल सब्सिडी	सुस्थापित और बेहतर तकनीकों के माध्यम से उत्पादों एवं प्रौद्योगिकी उन्नयन को बढ़ाना।
5	सूक्ष्म और लघु उद्यमों के लिए क्रेडिट गारंटी ट्रस्ट फण्ड (सीजीटीएसएसई)	वित्तीय संस्थाओं को क्रेडिट गारंटी देना, जो छोटे और मध्यम आकार के उद्यम (SMEs) एवं सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्यम (MEMEs) को ऋण प्रदान करना।
6	वस्त्र उद्योग – तकनीकी अपग्रेडिंग फण्ड योजना	स्थानीय कला एवं कलात्मक क्षेत्र में व्यापार को प्रोत्साहन देना।

स्त्रोत – msme.gov.in

सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग का भारत के सामाजिक–आर्थिक विकास में योगदान :–

भारत की अर्थव्यवस्था में सूक्ष्म लघु और मध्यम उद्योगों का बहुत महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इससे निम्न एंव मध्यम वर्ग के लोगों ने स्वयं के उद्योग को स्थापित करके भारत की अर्थव्यवस्था को सुदृढ़ बनाने में सहयोग प्रदान किया है।

- व्यक्तियों को सामाजिक न्याय एवं अवसरों की समानता दिलाना।
- रोजगार प्रदान करना।
- वस्तुओं का उत्पादन एवं आर्थिक सुदृढ़ता प्रदान करना।
- लोगों में आत्मनिर्भरता एवं स्वराज्य की भावना उत्पन्न करना।

तालिका – 2 : श्रेणी –वार उद्यमों का विवरण (संख्या लाख में)

क्रमांक	क्षेत्र	सूक्ष्म	लघु	मध्यम	कुल
1	ग्रामीण	324.09	0.78	0.01	324.88
2	शहरी	306.43	2.53	0.04	309.00
3	**कुल**	630.52	3.32	0.05	633.88

स्त्रोत –Government of India, Annual Report, SSI, Ministry of Industry, New Delhi, 2017-18

तालिका – 3 : एमएसएमई का राज्यवार अनुमानित वितरण

क्रमांक	राज्य	उद्यमियों की अनुमानित संख्या (लाख में)			
		सूक्ष्म	लघु	मध्यम	कुल
1	आंध्र प्रदेश	33.74	0.13	0.00	33.77
2	बिहार	34.41	0.04	0.00	34.45
3	छत्तीसगढ़	8.45	0.03	0.00	8.48
4	दिल्ली	9.25	0.11	0.00	9.36
5	गुजरात	32.67	0.50	0.00	33.17
6	मध्य प्रदेश	26.42	0.31	0.01	26.74
7	ओडिशा	19.80	0.04	0.00	19.84
8	पंजाब	14.56	0.09	0.00	14.65
9	राजस्थान	22.66	0.20	0.00	22.86
10	उत्तर प्रदेश	89.64	0.36	0.00	90
	कुल	291.6	1.81	0.01	293.42

स्त्रोत – Government of India, Annual Report, SSI, Ministry of Industry, New Delhi, 2017-18

भारत में लघु उद्योग की संभावनाएँ :–

भारत एक विकासशील देश है। भारत कृशि प्रधान देश होने के साथ–साथ प्राकृतिक संपदा और कलाओं से भी भरपूर है। प्राकर्षतिक संपदा और हस्तशिल्प कलाओं का के लघु उद्योग के विकास में बहुत

महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इसके साथ ही देश में परम्परागत कौशल एवं श्रम की कमी नहीं है। सामाजिक – आर्थिक विकास के साथ बेरोजगारी एवं गरीबी उन्मूलन हेतु लघु उद्योगो को प्रोत्साहित करने की जरूरत है। इस प्रकार लघु उद्योग को विकसित करने में अवसरों की कमी नहीं है। जरूरत है उचित स्थान के चयन की, श्रमिकों के कौशल विकास और लोगों को योजनाओं के प्रति जागरूक करने की। भारत में प्राकषतिक संपदा एवं कलाओं से संपन्न लघु उद्योग हेतु अनेक संभावनाएँ है।

लघु उद्योग को बढ़ावा देने हेतु सुझाव :–

- नागरिकों को लघु उद्योगों के प्रति जागृत करने हेतु विभिन्न जागरूकता संबंधी कार्यक्रमों का आयोजन।
- सूचना तकनीकी एवं सोशल मीडिया के बेहतर उपयोग से सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग को बढ़ावा देना।
- सहकारी समितियों के माध्यम से मार्केटिंग की समस्या को दूर करने हेतु प्रयास करना।
- स्थानीय संसाधनों, परम्परागत कौशल एवं मांग को ध्यान में रखकर उद्योगों की स्थापना हेतु लोगों को प्रोत्साहित करना।
- लघु उद्योगों से संबंधित योजनाओं के बारे में नागरिकों को जानकारी प्रदान कर लघु उद्यागों की ओर ध्यान आकृष्ट करना।
- कृषि एवं वनोपज आधारित क्षेत्रों में भी लघु उद्योगों की संभावनाओं को खोजना तथा मूल्य संर्वघन (Value addition) पर जोर।
- महिलाओं एवं युवाओं में लघु उद्योग के प्रति चेतना जागृत करने के लिए विशेष प्रयास करना।
- दिव्यांग व्यक्तियों को रोजगार स्वरोजगार एवं उद्यमिता हेतु आवश्यक सुविधायें प्रदान कर उन्हें प्रोत्साहित करना।

उपसंहार :–

गरीबी और बेरोजगारी देष में निरंतर बढ़ती जा रही है। इसे दूर करने का सफल प्रयास सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग के माध्यम से किया जा सकता है। युवा पीढ़ी को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग के प्रति जागरूक किया जाना चाहिए। जिससे देष में व्याप्त बेरोजगारी की समस्या से निजात पाया जा सके। सरकार की ओर से लघु उद्योगों को बढ़ावा देने हेतु निरंतर प्रयास किये जा रहे हैं। जरूरत है नागरिकों को सूक्ष्म, लघु एवं मध्यम उद्योग संबंधी योजनाओं के बारे में जागरूक करने की। नागरिकों को जागरूक करने एवं लघु उद्योग के विकास में समाज कार्यकताओं एवं गैर सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका है।

संदर्भ :–

NK *लघु उद्योगों के विकास के लिए सुविधायें एवं सेवाये, विकास आयुक्त मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली।*

OK *(2017-18). Annual Report. Ministry of Industry, Government of India.*

PK *सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम मंत्रालय (MSME)*

QK *लघु उद्योग – भारत कोष।*

****